शोध सार

प्रस्तुत शोध प्रेमचंद की कहानियों का माध्यम रूपांतरण (विशेष संदर्भ गुलज़ार द्वारा निर्देशित 'तहरीर' धारावाहिक) विषय पर है। इस शोध में दो महान व्यक्तित्व के धनी महापुरुषों के कार्य और समाज के प्रति उनका योगदान को संक्षेप में दर्शाया है। प्रस्तुत शोध में साहित्य से किस तरह सिनेमा में रूपांतरित होता है? उसके क्या चरण होते हैं? किसी प्रकार से एक कहानी या साहित्यिक विधा फिल्मांकन में तब्दील होती है? सभी महत्वपूर्ण बिन्दुओं और प्रश्नों को इस शोध में हल करने का प्रयास किया गया है। इसको बारीकी से समझने के लिए प्रेमचंद की तीन कहानियों को लिया गया है, जिनका सिनेमा में रूपांतरण गुलज़ार ने अपने निर्देशन 'तहरीर' धारावाहिक में किया है। इस प्रकार माध्यम रूपांतरण को सूक्ष्मता से समझने के लिए प्रेमचंद की कहानियों (सवा सेर गेहूँ ,ठाकुर का कुआँ और कफ़न) के लिपिबद्ध कहानियाँ और गुलज़ार द्वारा निर्देशित 'तहरीर' धारावाहिक में उसके फिल्मांकन का तुलनात्मक अध्ययन है ।

प्रस्तुत शोध के प्रथम अध्याय में (प्रेमचंद और गुलज़ार के जीवन और कलाक्षेत्र का परिचय है) इसके अंतर्गत प्रेमचंद और गुलज़ार दोनों के ही व्यक्तित्व और कृतित्व का वर्णन है।

दूसरे अध्याय में (साहित्य सिनेमा और समाज) इसमें भीतर साहित्य पर आधारित सिनेमा का इतिहास और वर्तमान क्या है? सिनेमा हेतु कथा और पटकथा का क्या अंतर्संबंध है?कथा और सिनेमा की समस्याएँ और साहित्य और सिनेमा का कलात्मक और प्रस्तुति दोनों पक्षों पर चिंतन है। तीसरे अध्याय में कहानी और फिल्म निर्माण-प्रक्रिया और उसका रचनात्मक सन्दर्भ है, जिसमें कहानी और फिल्म के तत्वों पर विचार किया गया है। जिन तत्वों से कहानी और फिल्म का निर्माण होता है। इसके बाद कहानी और फिल्म के निर्माण प्रक्रियाओं के चरण पर प्रकाश डाला गया है। तीसरे अध्याय के तीसरे उपाध्याय में रूपांतरण, रचनात्मक और उसके

मनोवैज्ञानिक प्रभाव पर विचार किया गया है। अंतिम उपाध्याय में माध्यमरूपांतरण सूक्ष्मता से समझने के लिए प्रेमचंद की कहानियों(सवा सेर गेहूँ ,ठाकुर का कुआँ और कफ़न) पर चिंतन किया है। उसके लिपिबद्ध और रूपांतरित फिल्मांकन पर संक्षेप में चर्चा की गई है।

चौथे अध्याय में प्रेमचंद की कहानियों और गुलज़ार द्वारा निर्देशित 'तहरीर' धारावाहिक पर विस्तृत रूप से विचार किया गया है। दोनों का तुलनात्मक अध्ययन भी किया गया है। रूपांतरित कहानियों के और फिल्म शिल्पगत अंतर और मनोवैज्ञानिक प्रभाव पर भी प्रकाश डाला गया।

पांचवां अध्याय (साहित्य से सिनेमा रूपांतरण तक की समस्याओं) पर चिंतन किया गया है और इन समस्याओं का संभव समाधान को भी बताने का प्रयास किया है। जिसमें पूर्व-प्रस्तुति की समस्याएँ पटकथा और कथा की समस्याएँ और उनका संभव समाधान कैसे किया जा सकता है। फिल्मांकन में मूलकथा को बचाने की समस्या। ज्यादातर निर्देशक अपनी स्वतंत्रता के चलते मूलकथा की हत्या कर देते हैं। जो लेखक की रचनात्मक कृति के साथ अन्याय है। आज के बदलते दौर में वैश्वीकरण व दर्शक की मांग के हिसाब से कई बार इतना कहानी बदल जाती है की उसकी मूल कहानी ही गायब हो जाती है। ये एक विकट समस्या है। जिस पर चर्चा की गई है रूपांतरित विधा का क्या प्रभाव है और बदलते यथार्थ का पटकथा और फिल्मांकन पर उसका नकारात्मक और सकारात्मक प्रभाव दोनों पर विचार किया गया है। इस प्रकार इन समस्याओं के समाधान पर भी प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तुत शोध माध्यमरूपांतरण जो प्रेमचंद की कहानियों और गुलज़ार द्वारा निर्देशित 'तहरीर' धारावाहिक का तुलनात्मक अध्ययन है। इस शोध में साहित्य पर आधारित सिनेमा, सिनेमा का इतिहास और कथा और पटकथा , फिल्म निर्माण प्रक्रिया के चरण, रूपांतरण के

प्रभाव, मनोवैज्ञानिक प्रभाव और दोनों के तुलनात्मक सन्दर्भ पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है । प्रस्तुत शोध साहित्य पर आधारित सिनेमा और उससे संबंधित कई समस्याओं और प्रश्नों को हल करेगा। आने वाले नवागंतुकों के लिए जो सहित्य और सिनेमा में रूचि रखते हैं। उनके लिए भी मार्गदर्शन का कार्य करेगा।